छोटे बच्चों के साथ मुखर वाचन

Early Literacy Initiative
Tata Institute of Social Sciences, Hyderabad

Practitioner Brief 9
2019

Supported by

TATA TRUSTS

This Practitioner Brief is part of a series brought out by the Early Literacy Initiative anchored by the Azim Premji School of Education at the Tata Institute of Social Sciences, Hyderabad.

छोटे बच्चों के साथ मुखर वाचन

शब्दचित्र 1



शिक्षिका कक्षा 1 व 2 के 20 विद्यार्थियों को अपने चारों ओर बिठाती हैं। अभी स्कूल में दिन शुरू ही हुआहै, अतः वह उन्हें शांत और व्यवस्थित करने के लिए एक प्रचलित गीत से शुरू करती है।

शिक्षिका (गाते हुए): क्या तुमने, क्या तुमने, हाथी देखा जी? क्या तुमने, क्या तुमने, हाथी देखा जी? वो तो यूँ..... वो तो यूँ .. वो तो यूँ-यूँ करता जी!

(हाव-भाव से दिखाते हुए कि हाथी कैसे अपना सूँड़ हिलाता है)

बच्चे गाने का आनंद लेते हुए और उनकी नक़ल करते हुए उनके पीछे दोहराते हैं। शिक्षिका हाथी के बदले एक-दो अन्य जानवर का नाम जोड़कर आगे बढ़ती हैं।

शिक्षिका **:** ठीक है, ठीक है, ***(एक सौ सैंतीसवाँ पैर*** पुस्तक के मुख्य (आवरण) पृष्ठ को दिखाते हुए)। आज हमलोग एक अन्य जीव के बारे में कहानी पढ़ेंगे।

सभी विद्यार्थी **:** ये ...कहानी!

शिक्षिका **:** हाँ, पास आओ। क्या आपको यह पुस्तक दिख रहा है ? (मुख्य पृष्ठ की ओर इशारा करते हुए) आपको इसमें क्या-क्या दिख रहा है?

एक विद्यार्थी : मुझे सूरज दिख रहा है।

बहुत सारे अन्य विद्यार्थी : पेड़।

शिक्षिका : तो ...बहुत सारे पेड़ कहाँ होते हैं ?

बच्चे : जंगल में !

शिक्षिका **:** बिल्कुल सही, तो शायद ये कहानी किसी जंगल की लगती है। कहानी का नाम एक सौ सैंतीसवाँ पैर है। (बच्चों के चेहरे में कोई भाव नहीं) हम लोग अभी कक्षा में गिनती सीख रहे हैं ना ? कौन-कौन सी संख्याएं जानते हो ?

बच्चे : 10, 20, 50… 35…

शिक्षिका **:** 20 बड़ा है 10 से , ठीक ? और , 50 बड़ा है 20 से , है ना ? क्या आप 50 से बड़ी संख्या जानते हो ?

बड़े बच्चे : 100! जैसे 100 रु 50 रु से ज़्यादा है …

शिक्षिका : बिलकुल सही ! 100 तो 50 से बहुत बड़ा होता है। और देखो कहानी का नाम है एक सौ सैंतीसवाँ पैर! (ज़ोर देकर पढ़ती है। इसका मतलब है सौ से भी ज़्यादा पैर ! अरे वाह ! **इतने सारे पैर** किसके होते हैं?

बच्चों के आँखें आश्चर्य से फैल जाती हैं।

विद्यार्थी 1 : चींटी ! विद्यार्थी 2 : मकड़ी !

अन्य बच्चे : नहीं ! चींटी और मकड़ी के इतने सारे पैर नहीं होते। मकड़ी के केवल आठ पैर होते हैं !

विद्यार्थी 3 **:** अरे हाँ !! तितली !

विद्यार्थी 4 : वो जो पत्तों पर रेंगती है (हाथों से इशारा करता करके बताता है कि कैसे चलती है)

शिक्षिका : हाँ, उसे क्या कहते हैं ?

विद्यार्थी 5 : इल्ली।

शिक्षिका : इल्ली ! हाँ , क्या आपने देखा है**?**

विद्यार्थी 3 **:** हाँ , मैंने देखा है। वे हरे अण्डों से निकलते हैं।

विद्यार्थी 4 : मैंने भूरा वाला देखा है।

शिक्षिका : तो इसका मतलब है इल्लियाँ कई प्रकार के और कई रंगों के हो सकते हैं... ठीक है, तो ये कहानी किसके बारे में है ?

बच्चे : इल्ली।

शिक्षिका : हाँ ! यह कहानी एक प्रकार की इल्ली के बारे में है जिसे ***गोजर*** कहते हैं। क्या आप जानना चाहेंगे कि गोजर के साथ क्या होता है?

बच्चे : हाँ! चलो पढ़ते हैं।

(शिक्षिका लेखक और चित्रकार के बारे में बताती है और कहानी पढ़ना शुरू करती है।)

बच्चे अच्छी कहानी सुनना पसंद करते हैं, जैसा कि आलेख में दिखाया गया गया है। भाषा और साक्षरता के अधिकांश विशेषज्ञ भी कक्षा में कहानी सुनाने और मुखर वाचन की ताक़त को पहचानते हैं और इनकी वकालत करते हैं।

मौखिक रूप से कहानी सुनाने में शिक्षक बच्चों को कहानी सुनाते हैं और इसपर उनसे चर्चा करते हैं ; जबकि मुखर वाचन में शिक्षक पुस्तक से कहानी पढ़ते हैं। न केवल कहानियों की पुस्तक, बल्कि तथ्य आधारित पुस्तक (उदाहरण के लिए, जानवर या पौधों के बारे में पुस्तक) भी मुखर वाचन के लिए इस्तेमाल की जा सकती है।

जब कक्षा में शिक्षक बच्चों के सामने नियमित रूप से मुखर वाचन करते हैं तो ऐसा लग सकता है जैसे शिक्षक कोई भी एक पुस्तक उठाते हैं और बच्चों के सामने पढ़ने ते हैं और बच्चे स्वतः ही पढ़ने में शामिल हो जाते है, पर ऐसा नहीं है। इसके लिए ध्यानपूर्वक विचार करना होता है, योजना बनानी होती है एवं अभ्यास करना होता है। उम्मीद है, इस हैंड आउट में परदे के पीछे की इन्हीं गतिविधियों को उजागर कर पाएंगे।

मुखर वाचन क्यों?

अमूमन पूरे भारत की कक्षाओं में, बहुत से बच्चों को एक ही ढर्रे से पढ़ना सिखाया जाता है - बोर्ड से अक्षरों की, और बाद में शब्दों, वाक्यों और अनुच्छेदों की नक़ल करके लिखाना। यदि इस तरह से बच्चे पढ़ना सीख भी जाएं तो भी शायद वे ये जान ही नहीं पाएंगे कि पढ़ना है क्या, या हम पढ़ते क्यों हैं।

पढ़ने के कई उद्देश्य होते हैं: आनंद के लिए पढ़ना, जानकारी के लिए पढ़ना, संप्रेषण के लिए पढ़ना इत्यादि। जब हम बच्चों के सामने मुखर वाचन करते हैं तो हम इनमें से कुछ कारणों को उनके साथ साझा कर रहे होते हैं। इस समझ के बिना बच्चे आगे के साक्षरता निर्देशों का शायद कोई अर्थ ही न बना पाएं। (Stahl, 1992)

मुखर वाचन बच्चों को यह भी दिखाता है कि भाषा कैसे काम करती है और अर्थ कैसे निकाला जाता है। (Barrentine, 1996) मुखर वाचन प्रदर्शित करता है कि कैसे एक अच्छा पाठक धाराप्रवाह, उचित हाव-भाव, गति और उतार-चढ़ाव के साथ पढ़ता है; पाठक पाठ (Text) को अर्थ में कैसे बदलते हैं एवं वे जो पढ़ रहे हैं उसे अपने पूर्व ज्ञान और अनुभवों से कैसे जोड़ते हैं ।

मौखिक कहानी की तरह, मुखर वाचन बच्चों की कल्पना और उत्सुकता को जोड़े रख सकता है। बच्चे पढ़ी और सुनी गई चीज़ों के बारे में सक्रियता से सोचते हैं : अब तक क्या हुआ है? आगे क्या होगा? क्यों? कैसे?

इससे अधिक, इस गतिविधि में बच्चों को वही आनंद मिलता है जो पाठकों को पढ़ने से मिलता है। ये सब बच्चों को स्वतंत्रतापूर्वक पढ़ने के लिए प्रेरित करता है और शायद उन्हें पढ़ने के आनंद को ढूंढने की जीवनपर्यंत यात्रा के लिए तैयार भी करता है।





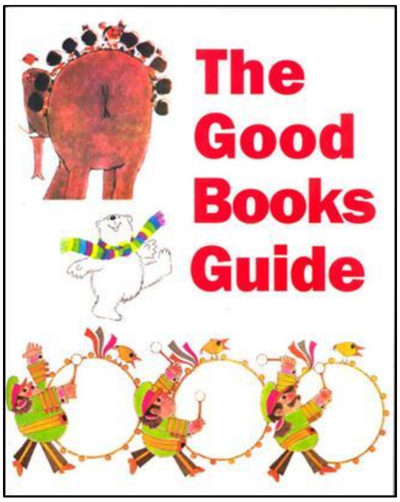
चित्र 1 स्वतंत्रतापूर्वक पढ़ते हुए, सजग मुंबई

प्रभावशाली मुखर वाचन विकसित करना

मुखर वाचन अच्छी तरह से करने के लिए विचारपूर्ण योजना और पर्याप्त अभ्यास की आवश्यकता होती है। (Shedd & Duke, 2008) हम इस प्रक्रिया पर विस्तार से चर्चा करेंगे ।हमने **Annexure I** में **मुखर वाचन योजना निर्देशिका** भी साझा किया है। आप इसका इस्तेमाल सत्र के लिए योजना बनाते समय नोट्स बनाने में कर सकते हैं। **Annexure** में योजना के विभिन्न पहलुओं का उदाहरण देने के लिए शुरूआत के आलेख (***एक सौ सैंतीसवाँ पैर*** का मुखर वाचन सत्र) में हमने 'शिक्षक के नोट्स' को शामिल किया है।

मुखर वाचन के लिए पाठ का चयन

- ऐसी किताबों का चयन करें जो बच्चों के लिए मज़ेदार व दिलचस्प हो; अर्थात, ऐसी किताबें जो बच्चों के उम्र, संदर्भ, ज़रूरतों और रुचि के अनुकूल हो। विषय-वस्तु, जिसमें कक्षाकक्ष की मौजूदा बातचीत की झलक हो या कोई ऐसा मसला जिससे आपके बच्चे जूझ रहें हों , भी एक अच्छा चुनाव होगा। *Good Books Guide* (नेशनल बुक ट्रस्ट, 2014[1] देखें चित्र 2) के अनुसार छोटे बच्चे ऐसी किताब पसंद कर सकते हैं जो ख़ुद के बारे में (अर्थात ख़ुद की पसंद/नापसंद, अनुभव, डर आदि को प्रकट करते हों), पारिवारिक जीवन, दोस्ती, जानवर, प्रकृति, स्नेह, कथा या काल्पनिक कहानी के बारे में हो।
- ऐसी किताबें चुनें जिनमें उच्च-स्तरीय वार्तालाप के मौक़े उपलब्ध कराने की क्षमता हो। अर्थात, बच्चों के उम्र और स्तर के लिहाज़ से क्या इस पुस्तक/पाठ में विषय-वस्तु की गहराई तक जाने की संभावना बनती है? क्या इसमें बच्चों के जीवन और उनके आस-पास की चीज़ों से जुड़ने की गुंजाइश है?
- छोटे बच्चे को ऐसी किताबों में आनंद आता है जिनके विषय/संरचना सरल हों एवं जिनके पात्र ऐसे हों जिनसे वे अपने आप को जोड़ सकें- कोई ऐसा जिनके विचारों तथा अनुभवों में उनके अपने विचार और अनुभव झलकते हों।



चित्र 2 The Good Books Guide, नेशनल बुक ट्रस्ट , 2014

[1] ऑनलाइन पर अंग्रेज़ी संस्करण यहाँ उपलब्ध है - http://eli.tiss.edu/wp-content/uploads/2017/08/Guide-to-Good-Books- 1.pdf

- भाषा-समृद्ध किताबें चुनें। छोटे बच्चों के लिए भाषा, तुकबंदी, शब्दों एवं ध्वनियों के खेल का रोचक इस्तेमाल पुस्तक पढ़ने को आनंददायक बना देता है।
- सुन्दर प्रभावशाली चित्रोंवाली किताबें चुनें जो बच्चों का ध्यान सहज ही आकर्षित करें एवं उनकी कल्पनाओं को नया रंग दे दें. चित्रों से भरपूर पन्ने या गहरे रंगवाले फ़ोटो बच्चों को कहानी समझने में मदद करते हैं और उन्हें उस पुस्तक को फिर से पढ़ने के लिए प्रेरित करते हैं, भले ही वे अभी परंपरागत तरीक़े से पढ़ नहीं पाते हों। बड़े बच्चों (कक्षा 4 एवं उससे ऊपर) के लिए सचित्र या कई अध्याय वाली किताबों का मुखर वाचन कर सकते हैं। हालाँकि, हम चित्रयुक्त किताबों से शुरू करने की अनुशंसा करते हैं।
- ऐसी किताबों का चयन करें जो समावेशी हों एवं किसी ख़ास समूह या समुदाय को घिसे-पिटे मानदंडों में या अवहेलनापूर्ण तरीक़े से प्रस्तुत न करती हों। उदाहरण के लिए आप ऐसी किताब का चयन कर सकते हैं जिसमें विकलांग बच्चों को असमर्थ या निर्भर दिखाने की बजाय निर्णय लेता हुआ दिखाया गया हो।
- समय के साथ, अलग-अलग विधाओं और शैली की किताबें इस्तेमाल करें, जैसे कविता, तथ्यपरक, साहसिक, हास्य इत्यादि।
- ऐसी किताबों को इस्तेमाल करने के बारे में भी विचार करें जिसमें भाषा सीखने के पर्याप्त मौक़े हों, जैसे प्रिंट की विभिन्न अवधारणाएं, शब्द-भंडार, कहानी की संरचना, लेखन-शैली इत्यादि।

पाठ का केंद्र/उद्देश्य तय करना

मुखर वाचन के उद्देश्यों के संबंध में स्पष्ट रहें। उद्देश्यों के निम्न उदाहरण हैं -

- प्रिंट की अवधारणाएं प्रदर्शित करना [2]
- कहानी की संरचना को सीखना
- अनुमान लगाना एवं आगे की जानकारी से अपने अनुमान को जाँचना-परखना
- संबंध जोड़ना सीखना जैसे कहानी/पाठ को ख़ुद (बच्चे) से जोड़ना, दुनिया से जोड़ना या पहले पढ़े गए दूसरे पाठों से जोड़ना
- दिए गए तथ्यों के आधार पर निष्कर्ष निकालना सीखना
- चित्रण और चित्र (दृश्य तत्व) एवं कहानी/पाठ के संबध पर चर्चा करना – क्या ये कहानी को विस्तार देते हैं? क्या ये पाठ के अर्थ को बदल देते हैं ? क्या ये स्थान या मनोदशा के बारे में कुछ महत्वपूर्ण बात बताते हैं?
- किसी एक या एक से अधिक साहित्यिक तत्वों जैसे कथानक, पात्र, विषय-वस्तु, भाषा-शैली, स्थान, विधा पर चर्चा करना। उदाहरण के लिए, यदि आप पात्र को लेते हैं तो आप कहानी के मुख्य पात्रों को पहचानने में, उनकी ख़ुद से या उनके परिचित लोगों से तुलना करने में बच्चों की मदद कर सकते हैं। कहानी में पात्रों द्वारा उठाए गए क़दमों के पीछे की उनकी सोच पर चर्चा करें; कहानी के पात्रों में किस तरह का बदलाव आता है इसकी जाँच करें। (Wolf, 2004)

इस हैंड आउट के शुरूआती आलेख में, शिक्षिका बच्चों को यह सीखने में मदद करना चाहती है कि अनुमान कैसे

[2] प्रिंट की अवधारणा के बारे में अधिक जानकारी के लिए 'Emergent Literacy' पर ELI Practitioner का सारपत्र देखें

लगाएं एवं आगे की जानकारी से अनुमान की जाँच कैसे करें (विस्तार के लिए Annexure I देखें)। याद रखें, पाठ के दौरान आप एक से अधिक चीज़ों पर ध्यान केंद्रित करने के लिए चुन सकते हैं- उदाहरण के लिए, चित्रण के साथ-साथ आप विषय-वस्तु पर भी बच्चों का ध्यान खींच सकते हैं ।

अपने सत्र के लिए उद्देश्य (या उद्देश्यों को) तय करने के लिए पाठ की ताक़त/विशेषता के साथ-साथ बच्चों की आवश्यकताओं के बारे में भी सोचें। उदाहरण के लिए, QUEST में फ़सिलिटेटर ने बच्चों को मुख्य पात्र (अनु नाम की छोटी लड़की) के अलग-अलग भावों को पहचानने में मदद करने के लिए ***जुई मौसी की बेटी***[3] पुस्तक का इस्तेमाल किया। इसके लिए उन्होंने उसकी वाणी और कार्य की ओर बच्चों का ध्यान दिलाया। कहानी में अनु अपनी मौसी के नवजात शिशु से पहली बार मिलने जाती है। इसे बच्चे अपने घर में भाई/बहन के जन्म के अनुभव से आसानी से जोड़ लेते हैं। अनु की भावनाओं पर चर्चा करने से फ़सिलिटेटर को यह भी उम्मीद थी कि बच्चे भावना व्यक्त करनेवाले मुख्य शब्दों को सीखेंगे एवं अपने अनुभवों को व्यक्त करने के लिए उनका इस्तेमाल करेंगे और इसके साथ ही जो पुस्तक वे पढ़ते हैं उसके मुख्य पात्रों के इरादों व कार्यों पर चर्चा कर सकेंगे।

अपने मुखर-वाचन का अभ्यास करना

मुखर-वाचन का संचालन अच्छे मुखर-वाचन का एक हिस्सा है। यदि आप हाव-भाव के साथ नहीं पढ़ते हैं, और अपने पाठकों को साथ लेकर नहीं चलते हैं, तो बहुत जल्दी ही आप अपने अधिकांश बच्चों को अपने वाचन के दौरान कसमसाते हुए, तथा एक-दूसरे का ध्यान भंग करते हुए पाएंगे। इसलिए, पुस्तक को हाव-भाव, उतार - चढ़ाव, उचित गति और आवाज़ के साथ पढ़ने का अभ्यास करना ज़रूरी हैं। कक्षा में मुखर-वाचन करने से पहले अपने पुस्तक को एक-दो बार ज़ोर से पढ़ने का अभ्यास करें। कब अपनी आवाज़ को धीमा करना है ; कब तेज़ करना है , कहाँ पर ज़ोर देना है; कहाँ पर गति धीमी करनी है; कहाँ गति बढ़ानी है; अलग-अलग पात्रों के संवाद को अलग-अलग आवाज़ में कैसे पढ़ना है आदि के बारे में सोचें। इस अभ्यास से पाठ के बारे में बच्चों की प्रतिक्रिया को निरीक्षण करने का समय मिलेगा। शुरू-शुरू में जब आप अभ्यास कर रहें हों तो अपने मित्र का सहयोग लें और इसपर उनसे उनकी प्रतिक्रिया लें।

मुखर-वाचन शुरू करना



चित्र 3 अपनी कक्षा में मुखर वाचन करती हुई एक शिक्षिक, . Mumbai Mobile Creches, Mumbai.

[3] यह किताब आपको यहाँ मिल सकती है https://storyweaver.org.in/stories/78-jui-mausi-ki-beti?story_read=true

मुखर वाचन के लिए ख़ास वातावरण बनाने की कोशिश करें – कक्षा में एक ख़ास स्थान चुने जहाँ आपके बच्चे एकत्रित होकर सुन सकें,जैसे रीडिंग कॉर्नर।

- बच्चों से कहें कि वे आपके चारों ओर आराम से बैठ जाएं। (देखें चित्र 3) पुस्तक को इस तरह पकड़ें कि बच्चे पाठ और चित्रों को साफ़-साफ़ देख सकें। यदि किताब छोटी है, तो हर एक या दो पेज के बाद चारों ओर दिखाएं ताकि बच्चे चित्रों को पास से देख सकें।
- सत्र के दौरान जो प्रश्न आप पूछना चाहते हैं या टिप्पणी करना कहते हैं उन्हें काग़ज़ की एक पर्ची में लिख सकते हैं।

बातचीत शुरू करना — संदर्भ निर्माण करना और रुचि जगाना

आप अपने बच्चों से पुस्तक का परिचय कैसे कराएंगें जिससे कि उनमें उत्सुकता और रुचि उत्पन्न हो? मुमकिन है, आप बच्चों को मुख्य पृष्ठ के चित्र का वर्णन करने के लिए कहें और इस आधार पर पुस्तक किस बारे में होगा यह सोचने के लिए कहें। ऐसे प्रश्न पूछें जो चित्रों और अनुमानों को उनके अपने जीवन से जोड़ने में मदद करें। यदि वे बिल्ली और चूहा मुख्य पृष्ठ पर देखते हैं तो चूहे और बिल्ली के बीच जो संबंध उन्होंने देखा है, उसके बारे में उन्हें सोचने के लिए कहें। इस पर आधारित अनुमान लगाने के लिए कहें कि कहानी किस बारे में है। आप यह भी देख सकते हैं कि क्या कोई ऐसी महत्वपूर्ण जानकारी, अवधारणा या शब्दार्थ हैं जिन्हें पाठ को समझने के लिए जानना ज़रूरी है।

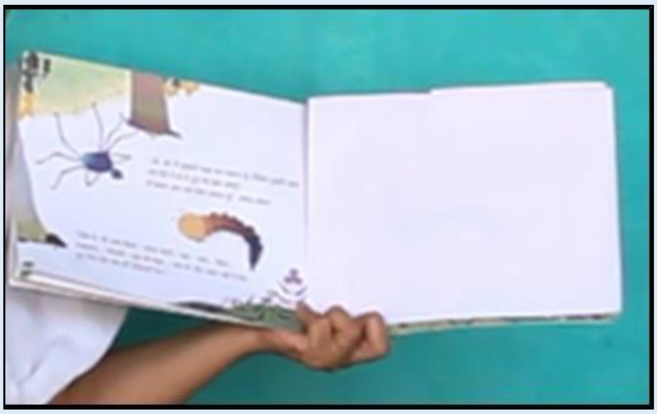
आलेख 1 में दिखाया गया है कि कैसे शिक्षिका ***एक सौ सैंतीसवाँ पैर*** के संदर्भ निर्माण में इन तत्वों पर ध्यान देती हैं। वह उन जीवों के बारे में सोचने के लिए कहती हैं जिनके बहुत सारे पैर होते हैं; और इस तरह वह बच्चों का ध्यान शीर्षक की तरफ़ खींचती है। वह जानती है कि वे शायद "*एक सौ सैंतीस* " संख्या को समझ न पाए, इसलिए इस संख्या के मान का उन्हें अंदाजा देने के लिए सहारा देती है (सौ से ज़्यादा..) और इस तरह कहानी के लिए रोमांच पैदा करती है। एक बार जब बच्चों ने उस जीव का अनुमान लगा लिया, तब वह उनको इस जीव के साथ उनके अनुभव को साझा करने के लिए कहती है – इल्ली/गोजर के प्रकार और रंग जो उन्होंने देखें हैं । ये बच्चे *इल्ली* शब्द से परिचित हैं लेकिन *गोजर* से नहीं जो कहानी में प्रयुक्त हुआ है। इस प्रकार शिक्षिका मुख्य शब्द को शुरू में ही समझा देती हैं। वह कहानी के परिवेश (setting) के बारे में संकेत देते हुए बच्चों को आवरण पृष्ठ के चित्रों का वर्णन करने के लिए कहती हैं।

मुखर वाचन के दौरान बातचीत

कुछ शिक्षक बच्चों से प्रश्न पूछने का कार्य मुखर वाचन के अंत में करते हैं। यह शायद मुखर वाचन का बहुत शानदार तरीक़ा नहीं है। इसकी बजाय, पढ़ने के दौरान तीन -चार जगह रुकने की कोशिश करें और बच्चों को इसमें शामिल करने की कोशिश करें ।

जहाँ तक इसका सवाल है कि कहाँ पर रुकना है और क्या पूछना है, स्वयं से पूछें कि इस पुस्तक को मुखर वाचन के लिए चुनने के पीछे आपके क्या-क्या उद्देश्य हैं ? यदि आपका इरादा बच्चों को चित्र और पाठ के बीच के संबंधों को बताना है तो ऐसे ख़ास पन्नों पर रुकें जहाँ इन दोनों का जुड़ाव मज़ेदार है। यदि आप अनुमान लगाना सिखाना चाहते हैं तो ऐसी जगह रुकें जब कुछ होने ही वाला है और बच्चों से पूछें कि उन्हें क्या लगता है कि आगे क्या होगा। आलेख 2 में *एक सौ सैंतीसवाँ पैर* में ऐसी ही बातचीत दिखाई गई है।

आलेख 2



(गोजर के टूटे हुए पैर को ठीक करने के लिए एक मकड़ी ने सहायता करने का प्रस्ताव रखा है। शिक्षिका अगले पेज को काग़ज़ से ढँक देती है और चर्च शुरू करती है।)

शिक्षिका : आपको क्या लगता है कि मकड़ी गोजर के पैर को कैसे ठीक करेगी ?

बच्चा 1 : वह इसे रस्सी या धागे से बांधेगी।

बच्चा 2: नहीं, इसे वह सुजी (सुई) से सिलाई करेगी।

बच्चा 3: वह इसे चिपकाने के लिए गोंद लगा सकती है।

शिक्षिका : ये सब बहुत मज़ेदार उपाय हैं। और क्या हो सकता है ? (बच्चों की तरफ़ से कोई जवाब नहीं) हम लोग एक मकड़ी के बारे में बात कर रहें हैं। क्या आप कुछ और तरीक़े सोच सकते हैं जिसमें एक मकड़ी टूटे पैर को जोड़ सके?

बच्चा 4: अरे हाँ , मुझे पता है ! वह अपने जाला से जोड़ेगी !

शिक्षिका : अच्छा, आपको ऐसा क्यों लगता हैं ?

बच्चा 4: क्योंकि यह चिपचिपा होता है जिससे मकड़ी कीड़े पकड़ती है।

शिक्षिका : हाँ, इसकी बहुत संभावना लग रही है। चलो देखें कि मकड़ी वास्तव में क्या करती है ?

(शिक्षिका अगले पेज से काग़ज़ हटा लेती हैं। चित्र में दिख रहा है कि मकड़ी गोजर के टूटे हुए पैर को अपने जाले से लपेट रही है। शिक्षिका इस ओर इशारा करती हैं और पाठ को पढ़ती हैं। अंत में, वह बच्चों से पूछती है कि क्या उन्होंने ध्यान दिया कि कौन-सा अनुमान सही हुआ।)

ध्यान दीजिए कि शिक्षिका ने ऐसे प्रश्न पूछे जिसमें बच्चों को सोच-समझकर जवाब देना पड़े। बहुत-सी कक्षाओं में शिक्षक/शिक्षिका केवल 'कौन' और 'क्या' वाले प्रश्न ही पूछते हैं। उदाहरण के लिए -

शिक्षक **:** गोजर के पैर को ठीक करने के लिए किसने मदद करने का प्रस्ताव दिया ?

बच्चे **:** मकड़ी।

शिक्षक **:**ठीक , मकड़ी।

इस प्रकार के सवाल-जवाब से बच्चों को पुस्तक को गहरे स्तर पर समझने में मदद नहीं मिलती है। भरपूर गुणात्मक बातचीत, जैसा कि आलेख 2 में है, बच्चों को 'क्यों' और 'कैसे' के बारे में सोचने के लिए उकसाते हैं एवं गंभीरता और गहराई से सोचने के लिए प्रेरित करते हैं।

पढ़ने के दौरान बच्चों का ध्यान चित्रों की ओर भी खींचे। आप उन चित्रों के बारे में सोच सकते हैं जहाँ रुककर थोड़ा समय बिताने की आपकी योजना थी : उद्देश्य को ध्यान में रखते हुए पाठ को समझने एवं उस पर जवाब देने के लिहाज़ से कौन-सा चित्र उपयुक्त है ? क्या इनमें बताने के लिए कोई रोचक तत्व या व्याख्या है? क्या चित्रों में कोई ऐसा पहलू है जो बच्चों की समझ को बाधित कर सकता हो एवं जिसके बारे में आपको उन्हें पहले से सचेत करना चाहिए ?

आप उन शब्दों की सूची रख सकते हैं जिन्हें बच्चों को समझने में कठिनाई हो सकती है ताकि आप उन शब्दों की व्याख्या करना न भूलें।

याद रखें , मुखर वाचन के दौरान, बातचीत अपेक्षाकृत संक्षिप्त रहे ताकि पठन/वाचन का प्रवाह न टूटे।

पुस्तक पढ़ने के बाद चर्चा करना

आपने पुस्तक पढ़ने से पहले बच्चों से बातचीत की है, आपने पुस्तक पढ़ने के दौरान बच्चों से बातचीत की है; और अब पुस्तक पढ़ने के बाद उनसे बातचीत करने करने का समय है ! यहाँ पर किस प्रकार की बातचीत सबसे ज़्यादा सहायक होगी ?

यहाँ भी, ऐसे प्रश्नों की योजना बनाएं जो बच्चों से एक या दो शब्द वाले उत्तर के बजाय सोचनेवाली प्रतिक्रिया निकाल सकें। आप इस प्रकार के सवालों से शुरू कर सकते हैं जिनसे यह जाना जा सके कि पुस्तक का उन पर कुल मिलाकर क्या प्रभाव पड़ा। जैसे - क्या आपको यह पुस्तक अच्छी लगी? क्यों/ क्यों नहीं? इस प्रकार के वार्तालाप के एक स्तर (दौर) के बाद शिक्षण उद्देश्य से संबंधित और ज़्यादा विशिष्ट प्रश्न पूछें। (Annexure I में ऐसे ही कुछ प्रश्न में दिए गए हैं जिनकी योजना आलेख में शिक्षिका ने बनाई थी)

जेसिका होफ़मैन (2011), पुस्तकों पर पारस्परिक चर्चा को प्रोत्साहित करने के लिए तीन रणनीतियों की अनुशंसा करती है। ये मुखर वाचन के दौरान और बाद की जाने वाली चर्चा पर लागू होते हैं। हालाँकि, विस्तृत बातचीत को मुखर वाचन के बाद के लिए बचा के रखना बेहतर होगा, ताकि कहानी का प्रवाह न टूटे। बच्चों के साथ लंबी बातचीत करने की जगह आप उसी पुस्तक को अगले दिन फिर से पढ़ सकते हैं।

रणनीति 1 : बच्चों को बात करने के लिए प्रोत्साहित करें

भारतीय कक्षाओं में प्रायः बच्चों को बोलने की अनुमति तभी होती है जब शिक्षक कोई सवाल करें, और वह भी तब, जब किसी का नाम पुकारा जाय। इससे बच्चे सहज रूप से बात करने या प्रतिक्रिया देने के लिए हतोत्साहित हो जाते हैं। हालांकि, सहज प्रतिक्रिया ही पुस्तक के बारे में साझी समझ बनाने में मदद करेगी। अतः, आपका पहला लक्ष्य

बच्चों को स्वतंत्रता पूर्वक बात करने के लिए तैयार करना है[4] । मुखर वाचन के दौरान एवं बाद, उन्हें प्रश्न पूछने, उत्तर देने, एक-दूसरे की बातों पर प्रतिक्रिया देने और विचार व्यक्त करने का मौक़ा दें।

रणनीति 2 : मिल-जुलकर अर्थ निर्माण करें।

कई शिक्षकों का मानना है कि बच्चों को पाठ का अर्थ उन्हें ही बताना पड़ेगा। वास्तविकता यह है कि बच्चे अर्थ निर्माण स्वयं कर लेते हैं। पाठ के बारे में अर्थ निर्माण की उनकी क्षमता को अपने बातचीत में विकसित करें। बच्चों के सहज विचार को जाँचकर समूह के अर्थ निर्माण की प्रक्रिया में मार्गदर्शन करें। आलेख 3 में उदाहरण प्रस्तुत है। ज़्यादा से ज़्यादा बच्चों को चर्चा में शामिल करें।

आलेख 3



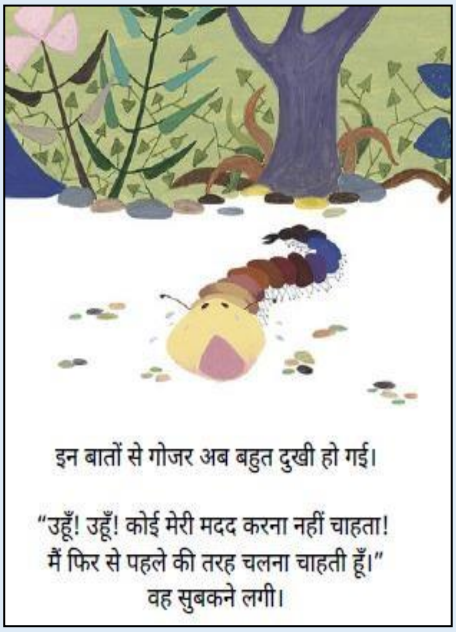
जब कक्षा दूसरे दिन कहानी पर चर्चा कर रही थी , एक बच्चे को ताज्जुब हुआ कि गोजर खाना लेने के लिए बाहर क्यों निकला – क्या उसके पास पर्याप्त पत्ते नहीं थे? शिक्षिका ने कहा कि उसने तो इसके बारे में सोचा ही नहीं था और उसने वह पृष्ठ खोला जिसमें इस घटना का वर्णन था। चित्र को देखते हुए अन्य बच्चे ने चिल्लाकर कहा कि गोजर के पास के पत्ते नीले हैं। शिक्षिका ने पूछा कि इसका क्या मतलब है और फिर चर्चा के माध्यम से कक्षा इस निष्कर्ष पर पहुंची कि शायद गोजर बाहर इसलिए निकला क्योंकि उसके आस-पास के पत्ते सड़ गए थे। यह संभव है कि लेखक की ऐसी कोई मंशा न हो पर शिक्षिका ने इसकी मान्यता दे दी। उसने इस अवसर का इस्तेमाल चित्र और पाठ को एक साथ मिलाकर कहानी की एक घटना का साझा अर्थ – निर्माण में किया।

रणनीति 3 : अर्थ का पुनर्निर्माण

कभी-कभी, बच्चे कहानी को ग़लत ढंग से समझ लेते हैं। इस स्थिति में, आप इसमें दखल दे सकते हैं। बच्चों से पाठ को फिर से देखने के लिए एवं सामूहिक रूप से जो समझ बन रही है, उसे जाँचने के लिए कहें। इस तरह आप त्रुटिपूर्ण अर्थ निर्माण पर ध्यान देने एवं उसे ठीक करने में अपने बच्चों की मदद कर सकते हैं जैसा कि आलेख 4 में दिखाया गया है ।

[4] यदि आप इस बात से चिंतित हैं कि शोर-शराबा होगा तो आप अपनी कक्षा को व्यवस्थित रखने की एक आसान तकनीक इस्तेमाल कर सकते हैं, उदाहरण के लिए, किसी ख़ास प्रतिक्रिया की ओर ध्यान खींच सकते हैं जिस पर आप चाहते हैं अन्य उसे आधार बनाकर आगे की चर्चा करें (सपना, तुमने क्या कहा ?) या चर्चा को समेकित करें (तो, राजेश कह रहे हैं......पर आप में से कुछ को लगता है कि ....) या याद दिलाएं (ठीक है, **इस** पुस्तक पर आपके विचारों पर वापस आते हैं) (Hoffman, 2011).

आलेख 4



शिक्षिका उस जगह पर रुकती है जहाँ गोजर का कोई भी मित्र या पड़ोसी उसकी मदद नहीं करता है और बच्चों से पूछती है कि अब आगे गोजर क्या करेगा! कुछ बच्चे कहते हैं कि गोजर तितली से मदद माँगेगा, क्योंकि शायद तितली उनके दिमाग में आती है। वे अपने उस जवाब को कहानी में पहले की घटना के आधार पर ठीक नहीं करते हैं : गोजर ने तितली से पहले ही मदद माँग ली थी और उसने मदद करने से इन्कार कर दिया था।

इसे ग़लत जवाब के रूप में ख़ारिज करने के बजाय, दूसरे बच्चों से सही जवाब लें। शिक्षिका ने दूसरे बच्चों से पूछा कि क्या बाक़ी बच्चों की भी यही लगता है, क्यों या क्यों नहीं। बाद में उसने वह पेज दिखाया जिसमें गोजर तितली से मदद माँगता है। इस तरह, उसने धीरे से कहानी की घटनाओं को सहीं ढंग से समझने में मार्गदर्शन किया।

यदि आपने कक्षा में सामूहिक अर्थ निर्माण में स्वतंत्र रूप से चर्चा करने एवं सभी के प्रतिक्रिया का सम्मान करने की संस्कृति बनाई है तो आपको इस बात की चिंता करने की आवश्यकता नहीं है कि आप ग़लती ठीक करते हैं और अर्थ के पुनर्निर्माण में मदद करते हैं। यदि ऐसा नहीं है तो बच्चे भविष्य में अपनी प्रतिक्रिया साझा करने में संकोच करेंगे।

पाठ के प्रति बच्चों की प्रतिक्रिया

अपने बच्चों को न केवल बातचीत के माध्यम से, बल्कि दूसरे अन्य माध्यमों जैसे- कला, लेखन, और नाटक (अभिनय) के माध्यम से भी से पाठ पर प्रतिक्रिया देने का मौक़ा दें। कुछ विचार हम साझा कर रहे हैं , परन्तु आप और कई तरीक़ों के बारे में सोच सकते हैं।

कला : कला और ड्राइंग के माध्यम से कहानी पर प्रतिक्रिया देने के लिए बच्चों को प्रोत्साहित करें। बच्चों ने जो पढ़ा या सुना है, उन्हें प्रकट करने के लिए ये मौक़े वास्तविक होने चाहिए, न कि पुस्तक के चित्रों को फिर से बनाने की महज़ खानापूर्ती। आप उन्हें कई चीज़ों के बारे में सोचने और चित्रित करने के लिए उकसा सकते हैं, जैसे कहानी की कौन-सी घटना उन्हें सबसे महत्वपूर्ण लगी या ऐसा कुछ जो मुखर वाचन के बाद उनके दिमाग में हो या कहानी के निर्णायक घटना को नाटक के रूप में खेलने की वे कैसे कल्पना करते हैं या उनके अपने जीवन और अनुभव जो कहानी से जुड़ें हों।

नाट्य प्रदर्शन (अभिनय) : कक्षा के साथ चर्चा में, आप पुस्तक को (यदि यह छोटी हो) या इसके महत्वपूर्ण भाग को नाटक के रूप में रूपांतरित कर सकते हैं। बच्चों को नाटक खेलना अच्छा लगता है क्योंकि इसमें वे अपना दिमाग, शरीर और आवाज़ लगाकर गहराई से जुड़ पाते हैं। नाटक बच्चों को प्रोत्साहित करने का एक अवसर भी है जिसमें वे पाठ और पाठ के बारे में अपने विचार और अनुभूतियों को प्रकट कर सकते हैं। Wolf (2004) इसके लिए शुरू-शुरू में नाटक के टेक्स्ट के आस-पास रहने का सुझाव देते हैं। बच्चों को यह सोचने के लिए प्रेरित करें कि वे किसी चुनिंदा दृश्य (भाग) में दिए संवादों के आदान-प्रदान या प्रतिक्रिया को कैसे प्रस्तुत करेंगे। बच्चों के साथ संवादों पर चर्चा करें और यदि वे ख़ुद नहीं लिख पाते हों तो उनके लिए स्क्रिप्ट लिखें।

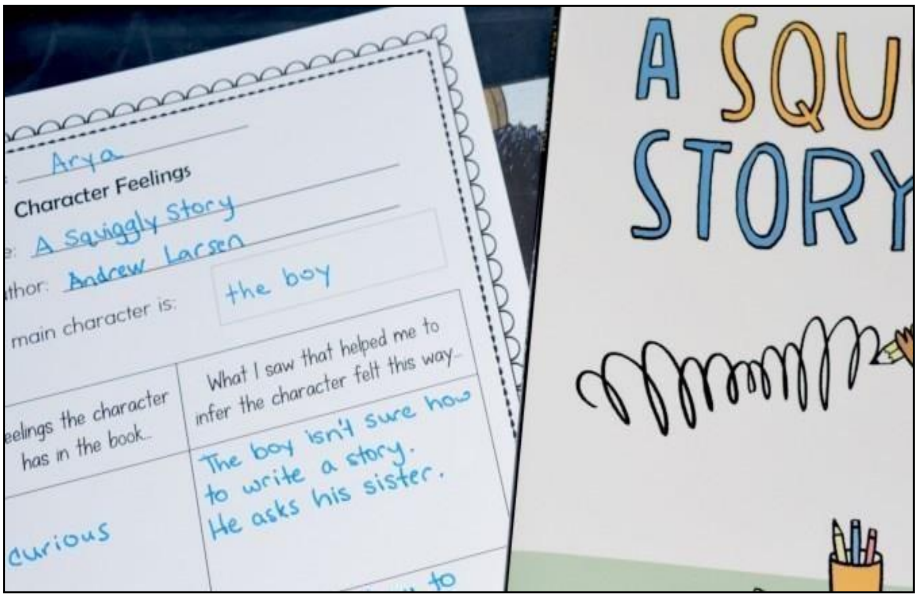
धीरे-धीरे समय के साथ या बड़े बच्चों के साथ आप बातचीत को उस दिशा में भी मोड़ सकते हैं जो पुस्तक में नहीं थे। (Wolf, 2004) बातचीत का विषय कुछ भी हो सकता है, जैसे पाठ में दो-तीन पात्रों के बीच अलिखित संवाद, पुस्तक समाप्त होने के बाद उनका जीवन कैसे ज़ारी रहेगा, इत्यादि। बच्चों को पात्रों (चरित्रों) की गहराई में जाना पड़ेगा और संवाद की रचना करनी होगी । आप उन्हें इन चुनावों के बारे में बात करने के लिए प्रोत्साहित कर सकते हैं। आपने अनुभव किया होगा कि नाट्य संबंधी सामग्री, नाटक की पूरी व्यवस्था और दर्शक चिंता के विषय नहीं हैं । प्राथमिक उद्देश्य तो यही है कि बच्चों ने जो पढ़ा है उस पर वे विचार प्रकट कर सकें और अपनी प्रतिक्रिया को साफ़-साफ़ कह सकें।

एक और उपयोगी सुझाव है कि बच्चे पुस्तक का कोई पात्र या उसका लेखक बन जाए। कक्षा के बाक़ी बच्चे उनका साक्षात्कार ले सकते हैं। इस साक्षत्कार में बाक़ी बच्चे उनकी प्रेरणा या अनुभूति, किसी अन्य परिस्थिति में वे क्या किए होते, इस स्थिति से वे और कैसे निपट सकते थे, लेखक ने ऐसा ही क्यों लिखा इत्यादि के बारे में सवाल पूछ सकते हैं।

लिखित प्रतिक्रिया

अपने बच्चों को पाठ के बारे अपनी प्रतिक्रिया लिखित में देने के लिए प्रोत्साहित करें। हम कुछ सुझाव या विचार प्रस्तुत करते हैं। बच्चों से यह अपेक्षा करने से पहले कि वे ख़ुद से इसे लिखें, इन्हें आप पहले उन्हें करके दिखाएं। आप कुछ रोचक वर्कशीट भी बना सकते हैं (देखें चित्र 4) जिससे छोटे बच्चों को अपनी प्रतिक्रिया को लिखने में मदद मिलेगी।

- कहानी या पुस्तक पर बच्चों की संपूर्ण प्रतिक्रिया : क्या पसंद/ नापसंद आया और क्यों
- पुस्तक में दी गई घटना से मिलती-जुलती अपने जीवन की घटना के बारे में लिखना
- बच्चे किसी पात्र (चरित्र) को कुछ बताते हुए या पूछते हुए, उस पात्र या उसके कार्य के बारे में उनके विचार और अनुभूति को साझा करते हुए पत्र लिख सकते हैं। इसी तरह, वे लेखक को भी अपने विचार, सवाल और सुझाव साझा करते हुए पत्र लिख सकते हैं।
- जहाँ संसाधन उपलब्ध हों, बच्चे मुखर वाचन में इस्तेमाल पुस्तक के बारे में अपनी प्रतिक्रियाओं/राय को रिकॉर्ड करते हुए डायरी/पत्रिका रख/बना सकते हैं। जब बड़े बच्चों के साथ कई अध्यायों वाली पुस्तक या लंबे पाठ का मुखर वाचन हो रहा हो तो आप उन्हें तात्कालिक प्रतिक्रिया, सवाल या अनुमान को इस डायरी/पत्रिका में रिकॉर्ड करने के लिए कहें। (Wolf, 2014)
- बच्चे कहानी को आगे बढ़ा सकते हैं या अंत को बदलकर लिख सकते हैं। अथवा कहानी में केंद्रीय घटना पहचान सकते हैं और यदि वह घटना बदल (दिया) जाए तो कहानी किस तरह प्रकट होगी इसकी कल्पना करते हुए लिख सकते हैं।



चित्र 4 पात्र के बारे में अनुभूति के लिए www. thecurriculumcorner.com

- बच्चों को मुख्य चरित्र के अलग-अलग अनुभूतियों को कारण सहित (अर्थात किस जानकारी के आधार पर इन अनुभूतियों को चुना) सूचीबद्ध करने के लिए कह सकते हैं। (देखें चित्र 4)
- मुखर वाचन में इस्तेमाल किए गए पुस्तक की विषय-वस्तु या लेखन शैली को अपने अनुरूप बनाकर बच्चे अपने स्वयं के पुस्तक बना सकते हैं।
- तथ्य आधारित पाठ के लिए बच्चे पाँच महत्वपूर्ण जानकारियों जो उन्होंने पाठ से सीखा है, को शब्दों या वाक्यांशों में लिख सकते हैं। वे आपकी मदद से 'सूचनाओं का जाल' भी बना सकते हैं । वे मुख्य श्रेणियों को निर्धारित करने में आपकी मदद ले सकते हैं। (जैसे साँप के 'सूचना-जाल' में रूप-रंग, प्रकार, भोजन, रहने का स्थान संबंधित जानकारी को अलग-अलग किया जा सकता है।)

अवलोकन और विचार

मुखर वाचन के बाद, अपने अवलोकन (बच्चों का) को रिकॉर्ड (दर्ज़) करें। आपके नोट्स समूह के जवाब (प्रतिक्रिया) या कुछ बच्चों के जवाब (प्रतिक्रिया) के बारे में हो सकते हैं। पूरे मुखर वाचन अनुभव पर चिंतन करें: सीखने के लिहाज़ से आपके बच्चों में किस प्रकार के गुण (ताक़त) हैं और उनकी क्या आवश्यकताएं हैं ? क्या आप अपने एक सत्र के उद्देश्य को पर्याप्त रूप से पूरा कर पाएं ? एक फैसिलिटेटर के रूप में आपके गुण (ताक़त) और आवश्यकताएं क्या हैं ? आप इन जानकारियों का उपयोग अपने आगे के सत्रों की योजना बनाने में कर सकते हैं। हमारे आलेख में शिक्षक/शिक्षिका के अवलोकन और चिंतन के लिए Annexure I को देखें ।

सारांश

समापन करने के लिए, यहाँ अच्छे मुखर वाचन के कुछ सुझाव प्रस्तुत हैं :

1. अपने बच्चों के संदर्भों, आवश्यकताओं और क्षमताओं से मेल खाता हुआ रोचक पाठ चुनें।

2. ख़ुद से सवाल करें कि चुनी हुई किताब को आप किस लिए इस्तेमाल कर सकते हैं: बच्चों को अनुमान लगाने में मदद करने के लिए, कहानी को उनके जीवन से जोड़ने के लिए, चित्रण (चित्रों) के अध्ययन के लिए। पुस्तक के साथ काम करने के लिए रोचक चीज़ों का चयन करें।

3. पूरे सत्र के दौरान पुस्तक के बारे में बात करने की योजना बनाएं – पढ़ने से पहले, पढ़ने के दौरान और पढ़ने के बाद । जब आप बात करते हैं तो चर्चा को भरपूर स्थान दें। 'कौन-क्या' वाले प्रश्न ना पूछें। गंभीर प्रश्न पूछें जो बच्चों को पाठ के बारे में गहराई से सोचने में मदद करें।

4. बच्चों के सामने पुस्तक की व्याख्या ना करें। इसके बजाय उनके साथ मिलकर अर्थ निर्माण करें। यदि बच्चों ने कहानी को पूरी तरह से ग़लत ढंग से समझा है तो उसे ठीक करने में संकोच ना करें। उनका ध्यान पुस्तक की बातों की ओर (जो पुस्तक में लिखा है) फिर से ले जाएं और देखें कि क्या साथ मिलकर आप कहानी की ज़्यादा उपयुक्त समझ बना पाते हैं।

5. बच्चों को पाठ पर विचार व्यक्त करने या प्रतिक्रिया देने के मौक़े दें; न केवल बातचीत के माध्यम से, बल्कि लेखन, कला (ड्राइंग), और अभिनय (नाटक) के माध्यम से भी।

6. मुखर वाचन की योजना बनाएं। सीधे कक्षा में जाकर बिना सोच विचार किए कोई भी एक पुस्तक उठाकर पढ़ देने से बात नहीं बनेगी। योजना बनाइये – फिर अभ्यास, अभ्यास और अभ्यास कीजिए !!

Adapted from ELI Handout 9 (2019):" Reading Aloud With Young Children"

References

Barrentine, S.J. (1996). Engaging with reading through interactive read-alouds. *The Reading Teacher,* 50 (1), pp. 36-43.

Hoffman, J. L. (2011). Coconstructing meaning: Interactive literary discussions in kindergarten read-alouds. *The Reading Teacher*, 65 (3), pp. 183-194.

National Book Trust. 2014. *The good books guide.* New Delhi: NBT.

Shedd, M. K. & Duke, N. (2008). The power of planning: Developing effective read-alouds. *Young Children*, 63 (6), pp. 22-27.

Stahl, S. A. (1992). Saying the “p” word: Nine guidelines for exemplary phonics instruction. *The Reading Teacher,* 45 (5), pp. 618-625.

Wolf, S. (2004). *Interpreting literature with children*. Chapters 2 and 3. New Jersey: Lawrence Erlbaum Associates, Inc.

Author: Akhila Pydah | **Conceptual Support and Editing**: Shailaja Menon

Copy Editing: Chetana Divya Vasudev | **Layout and Design**: Harshita V. Das

Annexure I: मुखर वाचन योजना निर्देशिका

मुख्य योजना क्षेत्र	शिक्षक के नोट
पुस्तक/पाठ • मुखर वाचन के लिए किस पुस्तक पर विचार कर रहे हैं ? • क्या पाठ गुणवत्ता के लिहाज़ से उपयुक्त है ? • क्या पुस्तक में उच्च-स्तरीय वार्तालाप के मौक़े उत्पन्न करने की क्षमता है ? • विद्यार्थियों का वर्णन करें- उम्र, संदर्भ, शैक्षणिक आवश्यकता। क्या यह उनके लिए दिलचस्प होगा?	**पुस्तक - एक सौ सैतीसवाँ पैर (प्रथम बुक्स, माधुरी पुरंदरे)** पाठ की गुणवत्ता अच्छी है। सतही तौर पर, यह कहानी मुख्य पात्र के ज़ख़्मी होने तथा किसी के द्वारा उनकी मदद करने की है। यह परानुभूति, दयालुता और मित्रता के मायने जैसे मुद्दों पर वार्तालाप के अवसर उत्पन्न कर सकती है। मेरे बच्चे NGO द्वारा संचालित स्कूल के कक्षा 1 व 2 के हैं। यह स्कूल, समुदाय (ग्रामीण बस्ती) में स्थित है। वे हिंदी और पारधी/गोंडी दोनों भाषाएं बोलते हैं। कहानी छोटी है और इसका कथानक सरल है जिसे ये छोटे बच्चे आसानी से समझ सकते हैं। इसके चित्र उन्हें आकर्षित करेंगे। पात्र (कीड़े,चिड़िया आदि) के साथ-साथ ज़ख़्मी होना, मदद माँगना, मित्रता आदि विषय-वस्तु से इस उम्र के बच्चे आसानी से अपने आप को जोड़ पाएंगे।
फोकस /पाठ का उद्देश्य • पाठ का उद्देश्य क्या है? • क्या यह पाठ (Text) आपके उद्देश्य के लिए ठीक है ?	मेरा उद्देश्य बच्चों द्वारा कहानी के सुने गए भाग एवं दुनिया के बारे में उनकी अपनी समझ के आधार पर उन्हें कहानी में आगे की घटनाओं का अनुमान लगाना सीखने और प्रतिक्रिया देने में मदद करना है। वे अपने अनुमानों को बाद में दी गई जानकारी का इस्तेमाल करते हुए जाँच भी सकेंगे। कुशल पाठक जब पढ़ते हैं तो वे इस प्रकार निरंतर अर्थ निर्माण में लगे रहते हैं। इस पुस्तक में दो-तीन महत्वपूर्ण जगह हैं जहाँ बच्चों से अनुमान लगवाया जा सकता है। इसके साथ ही, कथानक भी इतना जटिल नहीं है जो उन्हें परेशानी में डाल सके ।

<table>
<tr>
<td>

बातचीत शुरू करना

- पुस्तक में रूचि लाने के लिए आप बच्चों से इसका परिचय कैसे कराएँगे ?
- पुस्तक को समझने के लिए कौन-से महत्वपूर्ण जानकारी, पूर्व ज्ञान या शब्दार्थ ज़रूरी हैं ?

</td>
<td>

शुरुआती चर्चा में, मैं बच्चों को बहुत सारे पैरों वाले जीवों के बारे में सोचने के लिए उकसाते हुए उनका ध्यान कहानी के शीर्षक की तरफ़ आकर्षित करुँगी। वे शायद आसानी से *'एक सौ सैंतीस'* संख्या को न समझ पाएं, लेकिन कहानी के बारे में रोमांच पैदा करने के लिए बच्चों को इस संख्या के मान (सौ से ज़्यादा) का अंदाज़ा होना महत्वपूर्ण है, इसलिए मैं इसपर चर्चा केंद्रित करुँगी।

मुख्य पृष्ठ को देखकर मैं बच्चों को परिवेश (setting) का अनुमान लगाने के लिए भी कहूँगी।

बच्चे शायद *इल्ली* शब्द से परिचित होंगे लेकिन मुझे यह समझाना पड़ सकता है कि *'गोजर'* एक प्रकार की इल्ली है।

</td>
</tr>
<tr>
<td>

मुखर वाचन के दौरान आपस में बातचीत

- **चर्चा** - पाठ के फोकस (केंद्र) के आधार पर चयनित पुस्तक में 3-4 जगह चर्चा के लिए आमंत्रित करना
- **चित्रण**–मुखर वाचन के दौरान बच्चों का ध्यान किन चित्रों की ओर खींचेंगे ?
- **आवश्यक शब्द** – क्या पाठ में 2-4 ऐसे शब्द हैं जो आपके बच्चों के समझने के लिए महत्वपूर्ण /कठिन हैं? (ये शब्द, परिचय के समय चर्चा किए गए शब्दों से अलग हैं ।)

</td>
<td>

मैं इन जगहों पर बच्चों से प्रतिक्रिया लूंगी :

1. **पेज 7:** गोजर का पैर टूट गया। अब आगे क्या होगा? (सामान्य अनुमान)
2. **पेज 11:** कोई गोजर की मदद नहीं करता है। अब वह क्या करेगा ? (अनुमान में ऐसे विकल्प शामिल नहीं हो सकते जो गोजर पहले से कर चुका है।)
3. **पेज 14:** गोजर की मदद करने के लिए मकड़ी आगे आती है :
   - मकड़ी कहती है कि वह केवल 8 तक गिन सकती है। ऐसा क्यों ?(कहानी में अपने पूर्व ज्ञान को इस्तेमाल करने की ज़रुरत है ।)
   - आपको क्या लगता है कि मकड़ी गोजर के पैर को कैसे ठीक करेगी? (पूर्व ज्ञान पर आधारित अनुमान) (मैं उस पेज को ढँक दूंगी।)
   - गोजर के अपने पैरों को गिनने और टूटे हुए पैर का पता लगने के बाद पुस्तक के शीर्षक के महत्व के बारे में पूछें ।

पठन के समय मैं बच्चों को हर पेज के चित्रों पर ध्यान देने के लिए प्रोत्साहित करुँगी ।

कठिन शब्द : ख़ुमारी और दुबकी (p.4); सुबकने (p.12)

</td>
</tr>
</table>

मुखर वाचन के बाद पुस्तक पर चर्चा उन प्रश्नों के बारे में सोचें जो बच्चों से बिना किसी विस्तार के छोटे जवाब के बजाय विचारपूर्ण प्रतिक्रिया निकालें। उद्देश्य है- बच्चों ने जो पढ़ा है उसको समझने और उसपर विचार व्यक्त करने में सहायता करना।	**पुस्तक पढ़ने के बाद, चर्चा करने के लिए मैं निम्न प्रश्न पूछूंगी:** **1.** सामान्य प्रतिक्रिया : • क्या आपको पुस्तक अच्छा लगी? क्यों? या क्यों नहीं ? • कहानी का कौन-सा भाग आपको अच्छा लगा ? क्यों ? • कहानी का कौन-सा भाग आपको पसंद नहीं आया ? क्यों? 2. **ज़्यादा गहराई में ले जाना** : मेरे बच्चे विस्तार में उत्तर देने के आदि नहीं हैं। वे प्रायः बिना किसी व्याख्या के "अच्छा लगा/बुरा लगा या हाँ/ना जैसे उत्तर देते हैं। पर मुझे उम्मीद है कि मैं इन्हीं प्रतिक्रियाओं को आधार बनाकर थोड़ा और विस्तार दूंगी और परानुभूति, दयालुता, मित्रता जैसे विषय पर बातचीत करने की कोशिश करुँगी। • गोजर ने जिन चिड़ियों और कीड़ों से मदद माँगी थी, वे आपको कैसे लगे ? ऐसा क्यों? • क्या आप उन्हें गोजर के दोस्त कहेंगे ? ऐसा क्यों? या क्यों नहीं? • मधुमक्खियाँ काम में व्यस्त थीं और इसलिए वे मदद नहीं कर पाईं। क्या यह तितली और गौरैया के जवाबों से अलग हैं जो गोजर के प्रति बहुत कठोर थीं और जिन्होंने उसकी मदद नहीं की? ऐसा क्यों? या क्यों नहीं? 3. **व्यक्तिगत जुडाव** • क्या ऐसा कभी आपके साथ हुआ है? आपको कैसा लगा था? • आपके दोस्त यदि मुसीबत में होंगे तो आप क्या करेंगे ? क्या इसके कुछ उदाहरण देंगे ?
अवलोकन सत्र के बाद अपने अवलोकन (बच्चों का) को रिकॉर्ड करें ।	● ज़्यादातर बच्चे पढ़ने के दौरान साथ थे । हालाँकि, मैंने देखा कि कुछ बच्चे बीच-बीच में सो भी रहे थे। मैंने उनसे कुछ प्रश्न पूछकर और चित्र की तरफ़ उनका ध्यान आकर्षित कर वापस उन्हें पुस्तक की ओर लाने की कोशिश की। ● कक्षा 2 के बच्चे (जिनको मुखर वाचन का ज़्यादा अनुभव है) अनुमान लगाने के मामले में बेहतर थे। कक्षा 1 के बच्चों को अनुमान लगाते समय सूचना को दिमाग में रखना मुश्किल हो रहा था। उदाहरण के लिए , यद्यपि गोजर ने तितली से पहले ही मदद माँग ली थी , कुछ बच्चों ने इस भाग पर विचार नहीं किया । जब थोड़ी देर बाद मैंने अनुमान लगाने के लिए कहा कि गोजर अब क्या करेगा तो उन्होंने कहा कि वे तितली से मदद माँग सकते हैं।

यह पूरी कक्षा या कुछ बच्चों की महत्वपूर्ण प्रतिक्रियाओं के बारे में हो सकता है।	• व्यक्तिगत अनुभव को साझा करना शानदार था लेकिन मैंने महसूस किया कि कुछ बच्चों ने कहानी को ध्यान में रखे बिना या तुलना किए बिना ही अपने सामान्य अनुभवों को साझा किया।
चिंतन **मुखर वाचन अनुभव पर दुबारा सोचें और विचार करें।** • सीखने के लिहाज़ से बच्चों की विशेषता और उनकी आवश्यकताएं • फैसिलिटेटर के रूप में आपकी विशेषता और आवश्यकता • इस समूह के साथ आपका अगला कदम	• समझने या अनुमान लगाने के लिए छोटे बच्चों को पूर्व ज्ञान (पाठ से या दुनिया के बारे में ज्ञान से) के इस्तेमाल में ज़्यादा मदद करने की ज़रुरत होती है। • बड़े बच्चे अनुमान लगा सकते हैं और दुनिया को लेकर अपने ज्ञान को कहानी में ला सकते हैं (उदा. मकड़ी केवल 8 तक गिन सकती थी इसका कारण बता पाना) । लेकिन मैंने हर उदाहरण में इसकी पुष्टि नहीं की कि वे अपने अनुमान को नई मिली सूचना से जाँच रहे हैं या नहीं। मुझे इस पर ज़्यादा सजगता के साथ फोकस करने की ज़रुरत है। • मुझे लगता है इस पुस्तक में "सामान्य अनुमानों" की ज़्यादा ज़रुरत थी जिसमें पाठ को समझने के लिए बच्चों को दुनिया के बारे में अपने ज्ञान को इस्तेमाल करने की ज़रुरत थी। यह एक महत्वपूर्ण कौशल है लेकिन धीरे-धीरे मुझे उन्हें ऐसे पुस्तकों से परिचय कराने की आवश्यकता है जिसमें अनुमान लगाने के लिए पाठ में ही दिए गए सूचनाओं का इस्तेमाल हो। • बच्चे व्यक्तिगत जुड़ाव (कहानी से) के अनुभव साझा कर रहे थे। किन्तु शायद मुझे उन्हें अपने जुड़ाव को ज़्यादा स्पष्टता से बताने के लिए कहना होगा। • सामान्यतः, बच्चों को किसी विषय/प्रतिक्रिया पर विस्तार से चर्चा करने के लिए ज़्यादा मदद की ज़रुरत होती है। शायद यह एक कारण है कि इस पुस्तक में परानुभूति और दयालुता जैसे विषय पर ज़्यादा चर्चा नहीं हो सकी।